रात्रिक्लास 7.4.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बाबा पूछते हैं बाप आपे ही आयें हैं या कोई ने बुलाया है? शिवबाबा बच्चों से पूछते हैं शिवबाबा आपे ही आया है या बच्चों ने बुलाया? (ड्रामा अनुसार आया, बच्चों ने भी बुलाया था) बाबा अक्षर ही दो पूछते हैं बुलाया है या आपे ही आया है? यह ज़रूर है बच्चों को तो मालूम नहीं था बाप के आने का समय है। आपे ही जो करे वह देवता, कहने से जो करे वह मनुष्य। जिनको जानते ही (नहीं) उनको बुलावें भी कैसे? बाप कहते हैं मैं आपे ही ड्रामा अनुसार आया हूं। मनुष्यों को पता नहीं है बाप आने वाला है। मुझे मालूम है किस समय जाना है। मनुष्य तो एडीटर हैं ना। तुम भी एडीटर थे। बाप कहते हैं मैं आपे ही आया हूं। ड्रामा के प्लैन को मैं ही जानता हूं। मैं आपे ही आया। ड्रामा को बाप ही जानते हैं तब तो बच्चों को ड्रामा का राज़ बताते हैं। मुझे नॉलेज थी कि इस समय जाना है। ड्रामा का समय ही ऐसा है। बिगर बुलाये आपे ही आया। ऐसे तो बतलाते ही रहते थे; परन्तु ड्रामा को जानने वाला बाप ही है। बाप ही आकर समझाते हैं। मैं आया हूं तुमको फिर से वही सहज रायोग सिखलाने। मुझे नॉलेज थी कि कब जाना है। बाप बिन बुलाये आते हैं। ड्रामा को न जानने कारण बस बुलाते ही रहते हैं। बुलाना भी सिद्ध होता नहीं। कहते हैं भगवान कण–2 ठिक्कर–भित्तर में है। फिर बुलावेंगे कैसे? बाप सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को जानने की कितनी बुद्धि देते हैं। मनुष्य तो बन्दर से भी बदतर थे। ऋषि–मुनि भी नेति–2 करते थे। जानते ही नहीं थे फिर बुलाने की तो बात ही नहीं। ड्रामा के प्लैन को बाप ही जानते हैं; इसलिए उनको नॉलेजफुल कहा जाता है। ऐसे नहीं मनुष्यों के दिलों को जानते हैं। बाप कहते हैं जो न आप को जानते, न मुझे ही जानते हैं तो बुलावेंगे फिर कैसे? मैं तो बहुत अपनी र(रु)ची से ही आता हूं। सभी मनुष्य मात्र र(रु)ची से पार्ट बजाते हैं। मालूम नहीं पड़ता है। जब ऐसी हालत बच्चों की होती है तब मैं आकर अपना भी परिचय देता हूं। आने का राज़ भी समझाता हूं। समय भी समझाता हूं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। जबकि मैं आता हूं तुमको पुरुषोत्तम बनाने। तुम्हारा एमऑबजेक्ट है यह बनने का। बाप आते ज़रूर हैं। कहते हैं बच्चों, मैं राजाओं का राजा बनाने आता हूं। यह पढ़ाई भी है तो यज्ञ भी है। यज्ञ में आहुति ज़रूर डालनी है। यह रुद्र यज्ञ भी है। ज्ञान और योग भी है। तो बच्चों को समझाते हैं .... मुझे ह(ी) कहते हैं। मैं ज्ञान और योग भी सिखाता हूं। सारी पुरानी दुनियां इसमें स्वाहा होनी है; इसलिए (रुद्र ज्ञान) यज्ञ कहा जाता है। मेरे साथ योग लगाने से.. ..... बच्चे सिर्फ़ मुझे याद करो। योग तो अनेक प्रकार के सीखते। .....। ब्रह्मा को वा तत्व को फादर नहीं कहेंगे। अभी बाप समझाते हैं बच्चे मु(झ) बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। योग का अक्षर भी न लो। बाबा स्थूल प्रैक्टिस तो सिखलाते नहीं। सिर्फ़ याद की यात्रा सिखलाते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। ऐसे भी नहीं बैठकर याद करना है। लौकिक बाप को बैठकर याद करते हो ना। चलते–फिरते सभी कुछ करते उनको (याद) करते हो। अभी यह ध्यान में रखना है याद से ही हम सतोप्रधान बनेंगे। काम करते हुये भी मेरे को (याद) (करो)। कम से कम आठ घंटा गवर्मेन्ट की सर्विस में रहना है तो कर्मातीत अवस्था होगी। तुम पुरुषार्थ करते रहते हो। देखते भी है मेहनत है। बाबा युक्तियां बहुत बतलाते हैं। घूमने जाओ तो भी याद में रहो। ऐसे–2 अपना चार्ट बढ़ाते रहो। फायदा है। तब ही तुमको खुशी का पारा चढ़ेगा। देवताओं को सदैव आन्तरिक खुशी रहती है ना। बच्चे समझते हैं बाबा तो बहुत ही लवती है। मोस्ट बिलवेड है। सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। दुनियां में कोई भी मनुष्य नहीं जो अपन को आत्मा समझ और बाप को जाने। बाप समझाते हैं तुम कैसी आत्मा हो। तुम्हारे में पार्ट अविनाशी भरा हुआ है। यह बाप ही आकर नॉलेज देते हैं। सतोप्रधान बन सतोप्रधान विश्व का मालिक बनना है। बुलाने जो आवे वह मनुष्य। आपे ही करे वह देवता ..... बाप को याद करने से ही (बेड़ा) पार है। अच्छा, मीठे–2 बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते–नमस्ते। ओमशांति